व्याख्यान द्वारा :-
डॉ० मंजू शुक्ला [Asst. Professor]
हिन्दी संकाय
नेहरू ग्राम भारती (मानित)
विश्वविद्यालय प्रयागराज उ०प्र०

-: हिन्दी उपन्यास का उद्भव विकास :-
आधुनिक काल में-

'उपन्यास' हिन्दी गद्य साहित्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय विधा है। काव्य और नाटक आदि की तुलना में नवीन साहित्य रूप होते हुए भी उपन्यास इसलिए अधिक महत्वपूर्ण हो गया क्योंकि यह मानव जीवन के व्यापक और वैविध्यपूर्ण चित्रण के लिए अधिक उपयुक्त सिद्ध हुआ। यद्यपि प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी उपन्यास शब्द का प्रयोग उपलब्ध होता है। किन्तु आज के 'उपन्यास' के अर्थ में नहीं।

1- **'उपन्यास:** प्रसादनाम्' अर्थात् प्रसन्नता प्रदान करने वाली कृति को उपन्यास कहते हैं।

2- 'उपपत्तिकतोऽर्थो उपन्यास संकीर्तितः' अर्थात् किसी अर्थ को युक्ति युक्त रूप में प्रस्तुत करना उपन्यास है। आधुनिक 'उपन्यास' शब्द प्राचीन उपन्यास शब्द से सर्वथा भिन्न है। वह पश्चिम से आयात साहित्य प्रकार है तथा अंग्रेजी नावेल (NOVEL) शब्द का समानार्थी है। हिन्दी का उपन्यास शब्द उप + न्यास के संयोग से निर्मित है। उप का अर्थ है 'निकट' तथा न्यास का- रखना या प्रस्तुत करना। कहा जाता है कि उपन्यास शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम बंगला साहित्यकार भूदेव मुखर्जी ने किया था। इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए हिन्दी उपन्यास के विकास का श्रेय अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों को दिया जाता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित एक निबन्ध 'उपन्यास-रहस्य' में इस बात को स्वीकार किया है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासकारों एवं समीक्षकों में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है- "उपन्यास मानव चरित्र का चित्र-मात्र है। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA 2020/4/23 12:09

भारतेन्दु युगीन 'भाग्यवती' को कुछ आलोचकों ने प्रथम उपन्यास की संज्ञा प्रदान की है किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'परीक्षागुरु' को प्रथम मौलिक उपन्यास माना है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'पूर्णप्रकाश' तथा चन्द्र प्रभा को माना है। किन्तु वर्तमान समय में अधिकांश विद्वानों ने 'परीक्षा गुरु' को ही प्रथम मौलिक उपन्यास स्वीकार किया है। जिसमें उपन्यासकार ने सर्वप्रथम सामाजिक जीवन को अंकित करने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास का वर्ण्य विषय है — एक अमीर व्यक्ति के बिगड़ने तथा अन्ततः मित्र के सहयोग से सुधरने की घटना का वर्णन किया गया है। जो भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति को सर्वोच्च प्रमाणीक करते हुए उपदेश की प्रवृत्ति ग्रहण की गयी है। हिन्दी उपन्यास के विकास की परम्परा का अध्ययन करने के लिए चार वर्गों में विभक्त किया जाता है —

1- पूर्व प्रेमचन्द युग - 1882-1918
2- प्रेमचन्द युग - 1919-1936
3- प्रेमचन्दोत्तर युग - 1936-1960

पूर्व प्रेमचन्द युग — 1882-1918

यह हिन्दी उपन्यास का प्रथम चरण था। इस युग में ऐतिहासिक, सामाजिक, प्रणय-सम्बन्धी तथा तिलिस्मी और ऐय्यारी से सम्बन्धित उपन्यासों का सृजन हो रहा था। किशोरीलाल गोस्वामी, कृष्णप्रकाश सिंह अखौरी, ब्रजनन्दन सहाय आदि उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रणयन किया। यद्यपि इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक परिवेश का अभाव दिखायी देता है, तथापि इनकी काल्पनिक पृष्ठभूमि अत्याधिक सरस है। 'सराय कृत - लालचीन' कला की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यास माना जा

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA सकता है

2020/4/23 12

सामाजिक उपन्यासकारों में बालकृष्ण भट्ट कृत- 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886 ई०) तथा 'सौ अजान एक सुजान' (1892 ई०), पंडित लज्जाराम मेहता का 'धूर्त रसिकलाल' (1899) गोपालराम गहमरी का 'श्याम पतोहू' किशोरीलाल गोस्वामी के लवंगलता तथा 'कुसुम कुमारी' एवं हृदयहारिणी बालमुकुन्द गुप्त ने 'कामिनी' आदि सामाजिक उपन्यासों की रचना की।

देवकीनन्दन खत्री एवं गोपालराम गहमरी ने तिलिस्मी और ऐय्यारी पर उपन्यासों की रचना कर हिन्दी जगत को नवीन मनोरंजन सामग्री प्रदान की। खत्री कृत 'चंद्रकान्ता' (1891) तथा 'चन्द्रकान्ता - संतति' इतने लोकप्रिय उपन्यास सिद्ध हुए। इस समय, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1999 ई०) तथा अधखिला फूल (1907 ई०) और लज्जाराम मेहता का 'आदर्श हिन्दू' नामक मौलिक उपन्यासों का प्रणयन हुआ।

<u>प्रेमचन्द युग</u> → (1919-1936)

प्रेमचन्द जी को हिन्दी-उपन्यास के विकास में सबसे अधिक श्रेय प्राप्त है। इनके पूर्व उपन्यास केवल मनोरंजन के साधन थे जीवन सत्य के निकट नहीं। प्रेमचन्द के उपन्यासों में सभी गुण है, वे मनोरंजन के साधन भी हैं और सत्य के वाहक भी। 'गोदान' इनका सुप्रसिद्ध उपन्यास हैं, इसे जीवन का महाकाव्य कहा जा सकता है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में- <u>सेवासदन</u> (1918 ई०) वरदान (1920), <u>प्रेमाश्रय</u> (1922), <u>रंगभूमि</u> (1925) <u>काया-कल्प</u> (1926) <u>निर्मला</u> (1927), <u>प्रतिज्ञा</u> (1929) <u>गबन</u> (1931) <u>कर्मभूमि</u> (1933) <u>गोदान</u> (1935) आदि प्रमुख है।

प्रेमचन्द के सर्वप्रथम उपन्यास 'सेवा-सदन' में समाज की रूढ़िवादिता, स्त्री-शिक्षा की समस्या, अनमेल विवाह, वेश्या-समस्या, दहेज आदि पर विचार व्यक्त किया है। 'वरदान' मे आदर्शवादी दृष्टिकोण को प्राथमिकता प्रदान की गयी है। 'प्रेमाश्रम' में ग्रामीण जीवन के चित्रण की प्रधानता है।

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA
2020/4/23

'रंगभूमि' में भारतीय जीवन का शोषण, देशी नरेशों तथा जमींदारों की हीनवृत्ति, अंग्रेजों का जाल, शासक वर्ग की अत्याचारी मनोवृत्ति, सत्याग्रह आन्दोलन का आदि का अंकन है। 'कायाकल्प' में प्रेमचन्द की नवीन मनोवृत्ति का चित्रण प्रस्तुत है। 'निर्मला' और 'प्रतिज्ञा' में दहेज, अनमेल विवाह, बाल-विवाह वृद्धविवाह आदि सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। 'गबन' एक समस्या प्रधान नाटक है। 'कर्मभूमि' में स्वदेशी आन्दोलन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस युग के अनेक उपन्यासकारों ने मौलिक उपन्यासों का सृजन किया है। प्रसाद कृत 'कंकाल' (1929 ई.) 'तितली' (1934) और 'इरावती' (अधूरा) उपन्यास है। 'ककाल' में वर्तमान समाज के नरकंकाल का चित्र है जबकि 'तितली' में नारी भावना का। चतुरसेन शास्त्री ने 'हृदय की परख', 'हृदय की प्यास' 'अमर अभिलाषा', 'वैशाली की नगर वधु', 'सोना और खून', 'मन्दिर की नर्तकी' 'अपराजिता' आदि उपन्यासों की रचना की। इनके उपन्यास प्रेमचन्द की यथार्थवादी परम्परा के अन्तर्गत आते है।

इसके अतिरिक्त प्रतापनारायण श्रीवास्तव के विदा (1929), विजय (1927) विकास, विसर्जन आदि उपन्यास है।

छायावादी कवि निराला ने भी उपन्यासों का सृजन किया है। इनके उपन्यासों में भावुकता तथा कल्पनात्मकता का समन्वय है। इनके प्रमुख उपन्यास अप्सरा (1931), अलका (1931), निरूपमा (1936), प्रभावती एवं कुल्लीभाट हैं। इसके समय के अन्य उपन्यासकारों में हृदयेश, राधिका रमणसिंह श्रीनाथ सिंह, उषादेवी मित्र आदि प्रमुख है।

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA

प्रेमचन्दोत्तर युग – (1936–1960)

इस युग में मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों का सृजन इस युग की मूल विशेषता है। इस युग के उपन्यासकारों ने अपने पूर्ववर्ती युग की परम्परा को विकसित किया है जिनमें प्रेमचन्दयुगीन औपन्यासिक तत्वों की प्रमुखता है। विषय वस्तु की दृष्टि से इनकी प्रवृत्तियों को पाँच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1- मनोवैज्ञानिक उपन्यास
2- प्रगतिवादी उपन्यास
3- सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास
4- आंचलिक उपन्यास
5- आधुनिक बोध के उपन्यास

1) मनोवैज्ञानिक उपन्यास –

मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यासकारों में जैनेन्द्र कुमार का प्रमुख स्थान है इनके उपन्यासों में परख (1929) सुनीता (1935) त्यागपत्र (1937) कल्याणी (1939) सुखदा (1952) आदि महत्वपूर्ण है। भगवतीचरण वर्मा, इलाचन्द्र जोशी आदि ने मनोविश्लेषणात्मक भूमि पर आधारित उपन्यासों का सृजन किया है। वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रलेखा (1934), तीन वर्ष, टेढे मेढे रास्ते, भूले बिसरे चित्र, आखिरी दाँव इत्यादि। जोशी जी के प्रायः उपन्यासों मे अधिकतर यौन स्खलन तथा अवैध सम्बन्धों का अंकन है। (1941) पर्दे की रानी, प्रेत और छाया (1945) जहाज का पक्षी (1955) मुक्ति-पथ आदि उल्लेखनीय है।

अज्ञेय जी प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में बहु-चर्चित है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों मे 'शेखर एक जीवनी' (1941) 'नदी के द्वीप' (1951) तथा अपने-अपने अजनबी उल्लेखनीय है।

11- **प्रगतिवादी उपन्यास** – यशपाल जी प्रगतिवादी परम्परा के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार है। इनके उपन्यासों में बौद्धिकता के साथ राजनीतिक पृष्ठभूमि भी अग्रसर प्रतीत होती है। मनुष्य के रूप (1949) झूठा सच (1957)

अमीता (19..) इनके ऐतिहासिक उपन्यास हैं। प्रेमचन्द के बाद यशपाल जी के उपन्यास ही अधिक लोकप्रिय है।

3- सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास –

सामाजिकता का आग्रह लेकर चलने वाले उपन्यासकारों में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का नाम अग्रगण्य है। इनके उपन्यासों में सितारों का खेल, गर्मराख, गिरती दिवारें, बडी-बडी आँखे पत्थरअलपत्थर, शहर में घूमता आइना आदि प्रमुख है।

4- आंचलिक उपन्यास –

आंचलिक उपन्यासों की परम्परा का श्री गणेश फनीश्वरनाथ 'रेणु' के 'मैला आँचल' (1955) से स्वीकार की जाती है। किन्तु उसके पूर्व प्रेमचन्द के अनेक उपन्यासों तथा शिवपूज्य सहाय के 'देहाती-दुनिया' नामक उपन्यास मे भी प्राप्त होती है। शिवप्रसाद मिश्र कृत - बहती गंगा, अम्रत लाल नागर प्रणीत - बूँद और समुद्र और रांगेय राघव रचित - 'कब तक पुकारूं' आंचलिक उपन्यास है। आंचलिक भावबोध को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुखरित करने में 'अभिमन्यु अनत' का नाम विशिष्टता के साथ लिया जाता है।

5. आधुनिक बोध के उपन्यास –

आधुनिक हिन्दी उपन्यासकारों में पहले-पहल मोहन राकेश ने अपने उपन्यास 'अंधेरे बन्द कमरे' (1961) मे की है। राजकमल चौधरी का 'मछलीमरी हुई' इत्यादि। उपन्यास के क्षेत्र में दिन-प्रातिदिन नये-नये उपन्यासकार नवीन प्रयोगों के साथ अवतीर्ण हो रहे है। हिन्दी साहित्य का भविष्य उज्जवल से उज्जवलतम् प्रतीत होता है।